Note : If you would like to view or download the entire book please go through home page of Jain eLibrary Website – www.jainelibrary.org and register your e-mail id (or sign in if previously registered).

Shree Gyansar Gyanmanjarivrutti

Folder No.	002684
Granth Name	Shree Gyansar Gyanmanjarivrutti
Author - Gyansar	Yashovijayji
Author – Gyanmanjari Vrutti	Devchandra Vachak
Editor	Ramyarenu
Publisher	Kailashnagar Jain SanghSurat
Edition	1
Year	2008
Pages	506

श्री ज्ञानसार श्री ज्ञानमञ्जरीवृत्ति

फोल्डर नं.	००२६८४
ग्रन्थ	श्री ज्ञानसार श्री ज्ञानमञ्जरीवृत्ति
मूल – श्री ज्ञानसार	यशोविजयजी
मूल – श्री ज्ञानमञ्जरीवृत्ति	देवचन्द्र वाचक
संपादक	रम्यरेणू
प्रकाशक	कैलाशनगर जैन संघ – सूरत
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	२००८
पृष्ठ	५०६

मुख्य टाईटल
આશીર્વચન
પ્રકાશકીય
ગુંગો ગોળ તણા ગુણ ગાય
આવકાર
સંપાદકીય
જ્ઞાનસાર-જ્ઞાનમંજરીની હસ્તપ્રતોની માહિતી
विषयानुक्रम
ग्रन्थगतसंकेतानां सूचिः
पूर्णाष्टकम् -- १

मग्नाष्टकम् -- ८
संयमस्थानस्वरूपम् -- १३
मुनेस्तेजोलेश्यावृद्धिनिरूपणम् -- १४
स्थिरताष्टकम् -- १८
मोहत्यागाष्टकम् -- २३
ज्ञानाष्टकम् -- ३१
ग्रन्थिभेदस्वरूपम् -- ३६
गुणश्रेणिस्वरूपम् --- ४०
शमाष्टकम् --- ४२
दयाधर्मस्वरूपम् -- ४५
इन्द्रियजयाष्टकम् --- ४८
इन्द्रियशब्दे सप्तनयघटना --- ४९
इन्द्रियरक्तानां दुर्दशावर्णनम् -- ५३
त्यागाष्टकम् -- ५५
सुभाणुकुमारदृष्टान्तः -- ५६
द्वितीयापूर्वकरणनिरूपणम् --- ५९
क्रियाष्टकम् -- ६४
सत्क्रिया कदा भवेदितिप्ररूपण्-- ६७
द्रव्य-भावक्रियादर्शनम् -- ६९
तृप्त्यष्टकम् -- ७०
परतृप्तौ आत्मतृप्तिर्नेति बोधः --- ७३
निर्लेपाष्टकम्-- ७६
आत्मनो बन्धकताऽबन्धकतानिरूपणम् -- ७९
निःस्पृहाष्टकम् --- ८४
मौनाष्टकम् --- ८८
चारित्रव्याख्यानम् -- ९१
योगस्थानस्वरूपम् -- ९४
योगस्थानस्याल्पबहुत्वम् -- ९६
विद्याष्टकम् -- ९७
पदार्थानामसंक्रमः -- १०१
विवेकाष्टकम् -- १०३
बाह्यात्मादित्रयस्वरूपम् -- १०४
आत्मनः षट्कारकत्वम् -- १०८
माध्यस्थाष्टकम् --- ११२
सप्तनयवर्मनम् -- ११४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निर्भयाष्टकम् -- १२७
अनात्मशंसाष्टकम् -- १३२
तत्त्वदृष्ट्यष्टकम् -- १३७
वैराग्यविषये दृष्टान्तः -- १४०
सर्वसमृद्ध्यष्टकम् -- १४४
मुनेश्चक्रवर्त्युपमादर्शनम् -- १४७
कर्मविपाकचिन्तनाष्टकम् -- १४९
मुनेरदैन्यं कथमिति निरूपणण् -- १५१
भवोद्वेगाष्टकम् -- १५५
संसारस्य सागरौपम्यम् -- १५६
लोकसंज्ञात्यागाष्टकम् -- १६०
शास्त्राष्टकम्--- १६४
शास्त्रशब्दस्य निरुक्तिः -- १६६
परिग्रहाष्टकम् -- १६९
अनुभवाष्टकम् -- १७४
अनुभवेनैव शास्त्रास्वादस्य दर्शनम् --- १७७
योगाष्टकम् -- १७९
इच्छादियोगनिरूपणण् -- १८१
प्रीत्याद्यनुष्ठानप्ररूपणा -- १८४
नियागाष्टकम् -- १८६
भावपूजाष्टकम् -- १९०
ध्यानाष्टकम् -- १९४
तपोऽष्टकम् --- १९८
सर्वनयाश्रयणाष्टकम् -- २०३
वादत्रयस्वरूपम् --- २०८
अष्टकक्रमनिर्देशकारणम् --- २१२
क्रियाकृतकर्मक्षयस्य मण्डूकचूर्णोपमानम् --- २१६
ज्ञानसाररचनाक्षेत्रम् -- २१८
ग्रन्थकारप्रशस्तिः -- २२२
टीकाकरप्रशस्तिः --- २२३
परिशिष्टम्-१ --- १
परिशिष्टम्-२ --- १८८
परिशिष्टम्-३ --- १९५
परिशिष्टम्-४ --- २०६
परिशिष्टम्-५ --- २०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुद्धिपत्रकम् -- २११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org